242hi04

4

विधाओं का अध्ययन– ध्रुपद तथा धमार

ध्रुपद तथा **धमार** हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की वे प्राचीनतम विधाएँ हैं, जो अभी भी प्रचलित हैं। ऐसा माना जाता है कि इन विधाओं की जड़ें प्राचीन रचनात्मक विधा **'प्रबन्ध'** में हैं। इन विधाओं में राग की शुद्धता पर विशेष बल दिया जाता है।

परवावज की संगति में गाये जाने वाले इन विधाओं में ध्रुपद का गायन चौताल, सूल ताल, ब्रह्म ताल इत्यादि के साथ तथा धमार का गायन धमार ताल के साथ होता है। ध्रुपद के साहित्यिक पक्ष के अंतर्गत देवी-देवताओं तथा आश्रयदाता राजाओं के गुण-गान, जबकि धमार के साहित्यिक पक्ष के अंतर्गत होली का वर्णन होता है। ये दोनों की विधायें 16वीं शताब्दी के लगभग अत्यंत प्रचलित थीं, जिसे इन विधाओं का स्वर्ण युग माना जाता है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात् आप–

- **ध्रुपद** तथा **धमार** के संक्षिप्त इतिहास का वर्णन कर सकेंगे;
- **ध्रुपद** तथा **धमार** विधाओं को परिभाषित कर सकेंगे;
- इन विधाओं की दूसरी विधाओं से पहचान कर सकेंगे;
- **ध्रुपद** गायन की विविध वाणियों के नामों का उल्लेख कर सकेंगे;
- कुछ महान **ध्रुपद** गायकों का उल्लेख कर सकेंगे।

4.1.1 ध्रुपद

'ध्रुपद' अथवा 'ध्रुवपद' शब्द की व्युत्पत्ति दो संस्कृत शब्दों 'ध्रुव' तथा 'पद' से हुई है, जिनका अर्थ क्रमशः 'स्थायी रूप से स्थित या अटल' तथा 'साहित्यिक पक्ष या

बोल' है। अतः ध्रुपद को उस विधा के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जिसमें साहित्यिक बोल कुछ स्वरों एव ताल पर स्थायी रूप से स्थित (रचित) होते हैं। देवी, देवताओं, राजाओं व बादशोहा की वीरता, गरिमा या प्रशंसा के साथ-साथ ताल व नाद आदि के प्रसंगों से युक्त बन्दिशें ध्रुपद के रूप में गाई जाती हैं। इस विधा का गायन पखावज की संगत में होता है। ध्रुपद में जिन तालों का प्रयोग होता है, वे हैं- **चौताल, सूल, तीव्रा, ब्रह्म ताल** इत्यादि।

4.1.2 धमार

धमार भी **ध्रुपद** के समान रचनात्मक विधा है, जिसका गायन पखावज की संगत में होता है। **धमार** सदैव चौदह मात्रा के **'धमार' ताल** में बद्ध होता है। इसमें अधिकतर होली पर्व से सम्बन्धित पद होते हैं, राधा कृष्ण के होली खेलने से सम्बन्धित लीला पर होते हैं परन्तु मध्ययुग में विकसित होने के कारण राजाओं व बादशाहों की वीरता व शौर्य से सम्बन्धित पद भी धमार के रूप में गाए जाते हैं।

पाठगत प्रश्न 4.1

1. **ध्रुव- पद** का क्या अर्थ है?
2. **धमार** में किस प्रकार का साहित्य होता है।
3. **ध्रुपद** - **धमार** के साथ जिस ताल वाद्य की संगत होती है, उसका नाम बताइये।
4. धमार के साथ कौन-सी ताल बनाई जाती है।

4.2 इतिहास एवं विकास

ऐसा माना जाता है कि ध्रुपद का विकास ध्रुव प्रबन्धों से हुआ है। अपने आधुनिक स्वरूप में ध्रुपद 15वीं/16वीं शताब्दी से प्रचार में रहा है तथा अभी भी प्रचलित है। इसके प्राचीन स्वरूप में स्वर, लय तथा पद (स्वरानुक्रम, गतिक्रम तथा साहित्यिक पक्ष) तीनों ही अवयवों का समान महत्त्व था। चूँकि साहित्यिक पक्ष या पदों की रचना पूर्णतया स्वर तथा ताल पर स्थायी रूप से स्थित थी, अतः इस विधा को ध्रुवपद कहा गया। बाद में ध्रुवपद में कुछ परिवर्तन हुए और शास्त्रीय संगीत की एक प्रमुख विधा के रूप में 'ध्रुपद' प्रचलित हो गया।

16वीं शताब्दी में ग्वालियर के राजा मानसिंह तोमर ने इस विधा को प्रोत्साहन दिया। अपने ग्रंथ **'मानकुतूहल'** में उन्होंने ध्रुपद की विशेष रूप से चर्चा की है। उनके अनुसार ध्रुपद का साहित्य 'देशी' या मध्य भारत की लोक भाषा, ब्रज भाषा में लिखा

जाता था। संस्कृत अथवा हिन्दी में भी ध्रुपद उपलब्ध हैं। ध्रुपद के साहित्य में अधिकतर देवताओं तथा आश्रयदाता राजाओं की प्रशंसा होती है, जबकि धमार के साहित्य में रंगों के त्योहार, होली का वर्णन होता है। बंदिश चार भागों में विभाजित होती है, यथा **स्थायी, अंतरा, संचारी** तथा **आभोग** परन्तु कुछ बंदिशों में केवल दो ही भाग– **स्थायी** तथा **अंतरा** होते है। राजा मानसिंह तोमर के अतिरिक्त बादशाह अकबर ने भी ध्रुपद को विशेष प्रोत्साहन प्रदान किया। मियां तानसेन, नायक गोपाल तथा नायक बख्शू 16वीं शताब्दी के कुछ महान ध्रुपद गायक थे। इस काल को ध्रुपद का स्वर्ण युग माना जाता है, जब ध्रुपद गायन उत्तर भारत के विभिन्न भागों में प्रचलित हुआ।

ध्रुपद गायन की चार 'वाणियाँ' अथवा शैलियाँ हैं, जिनके नाम हैं:

1. **गौवरहार**
2. **खंडार**
3. **डागर**
4. **नौहार**

ऐसा माना जाता है कि ग्वालियर के मियां तानसेन ने **गौरहार बानी,** डागर (दिल्ली के निकट) के ब्रजचंद ने **डागर बानी**, खंडार के राजा सम्मोखन सिंह ने **खंडार बानी** तथा नौहार के श्रीचंद ने **नौहार बानी** ईज़ाद की।

पाठगत प्रश्न 4.2

1. किस प्राचीन रचनात्मक विधा में **ध्रुपद** की जड़ें हैं?
2. ध्रुपद किन शताब्दियों में सर्वाधिक प्रचलित था?
3. **ध्रुपद** तथा **धमार** के दो कौन-से राजा महान आश्रयदाता थे?
4. **ध्रुपद** की बंदिश के चार भागों का उल्लेख कीजिये।
5. **ध्रुपद** गायन की चार वाणियों के नाम बताइये।
6. सोलहवीं सदी के चार महान ध्रुपद गायकों का नाम लिखिए।

4.3 ध्रुपद तथा धमार गायन की विशेषताएँ

ध्रुपद तथा धमार, दोनों के गायन की विशिष्ट शैली है। सर्वप्रथम राग को निरर्थक अक्षरों, जैसे- **नोम, तोम, देरे, न** इत्यादि के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। गायन का यह भाग **'आलाप'** कहलाता है तथा इसमें तालयुक्त संगत नहीं होती है। आलाप के अंत में वाद्य संगीत के 'जोड' विन्यास की भांति तेज गतिक्रम में निरर्थक अक्षरों का गायन होता है। तत्पश्चात बंदिश का गायन होता है।

बंदिश का गायन पदों के समूहों को लेकर विविध प्रकार से तत्क्षण निर्माण करके होता है, यह भाग **'उपज'** कहलाता है, जो ध्रुपद गायन की निजी विशेषता है। ये तत्क्षण निर्माण मूल गति पर पुनः आने से पहले उसके **दोगुन, तिगुन** तथा **चौगुन** आदि के प्रयोग से होता है। **धमार** का प्रस्तुतिकरण भी इसी प्रकार होता है।

ध्रुपद - धमार गायन में ताल एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण पक्ष है। इनके साथ तालयुक्त संगत पखावज के द्वारा होती है। ध्रुपद गायन में जिन तालों का अधिकतर प्रयोग होता है, वे हैं – **चौताल, मत्त, ब्रह्म, लक्ष्मी, सूल, तीव्रा,** इत्यादि। धमार वस्तुतः चौदह मात्रा युक्त धमार ताल में बद्ध होता है।

कुछ महान ध्रुपद गायकों के नाम

प्राचीन ध्रुपद गायक

बहराम खाँ, नसीरुद्दीन खाँ, जदुभट्ट, गोपेश्वर बैनर्जी, रहीमुद्दीन खाँ डागर, नसीर मोइनुद्दीन खाँ डागर, अमीनुद्दीन खाँ डागर, जहीरुद्दीन खाँ डागर, फ़ैयाजुद्दीन खाँ डागर, राम चतुर मलिक, सियाराम तिवारी, चन्दन चौबे इत्यादि।

आधुनिक ध्रुपद गायक

रहीम फहीमुद्दीन डागर, वसीफुद्दीन डागर, बहउद्दीन डागर, फैयाज वसीफुद्दीन डागर, विदुर मलिक, प्रेम कुमार मलिक, अभय नारायण मलिक, फाल्गुनी मित्र, ऋत्विक सान्याल इत्यादि।

पाठगत प्रश्न 4.3

1. **ध्रुपद** तथा **धमार** में आलाप के अंतर्गत राग को किस प्रकार प्रस्तुत किया जाता है?
2. **आलाप** का अंत किस प्रकार होता है?
3. **उपज** किसे कहते हैं?
4. **धमार** किस ताल में बद्ध होता है?

आपने क्या सीखा

1. **ध्रुपद** तथा **धमार** हिन्दुस्तानी संगीत की वे प्राचीनतम विधायें हैं, जो आज भी प्रचलित हैं।

2. **ध्रुपद** के साहित्य में देवताओं अथवा आश्रयदाता राजाओं की प्रशंसा होती है।
3. **धमार** की विषय सामग्री रंगों के त्योहार होली के विवरण से युक्त होती है।
4. **ध्रुपद** गायन में जिन तालों का प्रयोग होता है, वे हैं-**चौताल, सूलताल, तीव्रा, मत्त, ब्रह्म** तथा **रूद्र** ताल।
5. **धमार** वस्तुत: धमार ताल में बद्ध होता है।
6. दोनों विधाओं का गायन ताल वाद्य पखावज की तालयुक्त संगत के साथ होता है।

पाठांत प्रश्न

1. ध्रुपद तथा धमार को परिभाषित कीजिये।
2. ध्रुपद तथा धमार की भाषा एवं साहित्य पर चर्चा कीजिये।
3. ध्रुपद तथा धमार के गायन में जिन तालों का प्रयोग होता है, उनके नाम बताइये।
4. ध्रुपद-धमार के गायन में गतिक्रम की भूमिका का वर्णन कीजिये।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

4.1

1. '**ध्रुव**' का अर्थ है स्थायी रूप से स्थित या अटल तथा 'पद' का अर्थ है साहित्यिक पक्ष या बोल। अत: ध्रुव-पद का अर्थ है वह साहित्यिक रचना जो स्वरों और ताल पर स्थायी रूप से स्थित (रचित) हो।
2. धमार में अधिकतर होली तथा राजाओं व बादशाहों की वीरता व शौर्य से सम्बन्धित साहित्य होता है।
3. पखावज।
4. धमारताल।

4.2

1. प्रबन्ध।
2. धमार
3. राजा मानसिंह तोमर तथा बादशाह अकबर।

टिप्पणी

4. स्थायी, अंतरा, संचारी तथा आभोग।
5. गोवरहार, खंडार, नौहार तथा डागर।
6. बहराम खाँ, नसीसद्दीन खाँ, रहीम फहीमुद्दीन डागर, ऋत्विक सान्यल

4.3

1. आलाप के अंतर्गत राग को निरर्थक अक्षरों, जैसे – **नोम, तोम, देरे, ना** इत्यादि के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है।
2. आलाप के अंत में वाद्य संगीत के 'जोड' विन्यास की भांति तेज गतिक्रम में निरर्थक अक्षरों का गायन होता है।
3. बंदिश के पदों के प्रयोग से राग में तत्क्षण निर्माण उपज कहलाता है।
4. धमार चौदह मात्रा से युक्त धमार ताल में बद्ध होता है।

पारिभाषिक शब्दावली

1. प्रबन्ध – एक प्राचीन रचनात्मक विधा।
2. पखावज – एक ताल वाद्य जो गायन की दोनों विधाओं ध्रुपद तथा धमार के साथ संगत के रूप में बजाया जाता है।
3. निरर्थक अक्षर – बिना अर्थ के प्रतीत होने वाले अक्षर।
4. आलाप – बिना तालयुक्त संगत के राग का पहले धीमी गति से फिर तीव्र गति से क्रमिक रूप से विस्तार।
5. जोड – वाद्य संगीत का तेज गतिक्रम से युक्त विन्यास जिसके माध्यम से आलाप के अंत में निरर्थक अक्षरों का गायन होता है।
6. उपज – बंदिश के पदों अथवा शब्दों की मदद से राग में तत्क्षण निर्माण।